ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 128-130
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

गुप्तकाल में मिथिला की ऐतिहासिकता का अध्ययन

डॉ0 सुमन कुमार

पी–एच० डी० (इतिहास), बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफरपुर (बिहार) भारत

Received-26.02.2024, Revised-01.03.2024, Accepted-07.03.2024 E-mail: mbisumankumar1@gmail.com

***सारांशः** मिथिला की भूमि ने हजारों वर्षों के अंतर्गत अनेक राजवंशों के उत्थान पतन उनके युद्ध एवं शांतिप्रिय नीतियों तथा राजतंत्र से परिवर्तित होकर प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली और साम्राज्यवाद के विस्तार का स्वरूप देखा है। इस भूखण्ड पर शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रथम शासन स्थापित करने वाले विदथ माधव और पुराणों के अनुसार निमि थे। इसकी प्रथम राजधानी जयंत या वेजयंत थी। जिस राजवंश को यहाँ स्थापित की गयी वह राजवंश जनकवंश के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। अब प्रश्न उठता है कि इस वंश का नाम जनक वंश क्यों पड़ा – डॉ0 योगेन्द्र मिश्र का विचार है कि जनक शब्द की उत्पत्ति जन से हुयी है। लैटिन भाषा में इसे जेनस एवं ग्रीव में जेनोल कहा जाता है जिसका अर्थ कबिला का नेता होता है। इसलिए विदथ माधव जिन्होंने मिथिला प्रवेशकर्ता दल का नेतृत्व किया था का नाम जनक रखा गया।*

इस तरह जनक वंश के समक्ष में मिथिला के गणतंत्र का विकास हुआ और गौतमबुद्ध के समझ में मिथिला वैशाली गणतंत्र का एक अंश बन गए। मिथिला कुशाण साम्राज्य का भी एक अंग था। यह भी कहा जाता है कि कनिष्क वैशाली से गौतम बुद्ध का पात्र अपने साथ ले गया था। इस तरह प्रमाणित हो जाता है कि मिथिला कुषाणों के शासनाधीन गुप्तों के उत्थान के पहले तक था। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह देखा जा रहा है कि गुप्तकाल में मिथिला की ऐतिहासिकता किस प्रकार रही है।

कुंजीभूत शब्द– शतपथ ब्राह्मण, साम्राज्यवाद, राजवंश, मिथिला, गुप्तकाल, शांतिप्रिय नीतियाँ, प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली।

जिस समय भारत में एक सार्वभौम सत्ता का अभाव था और उत्तर भारत में नागवंश और वकाटक वंश का सूर्य भी अस्ताचल गामी हो चला था। उसी समय गुप्तों का उदय भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर हुआ। गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। क्योंकि इसी युग में भारत ने राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय गौरव प्राप्त किया था। महान मौर्य सम्राटों के बाद गुप्तवंशीय सम्राटों ने ही पुनः भारत को एकता के सूत्र में पिरोनें का काम किया। जिसमें उन्हें सफलता भी मिली साथ ही साथ तत्कालीन अन्य शक्तियों का मानमर्दन कर एकक्षत्र राज्य की स्थापना भी किया। इस वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था।

श्रीगुप्त का पुत्र घटोत्कच था। जिसकी एक मुहर वसाढ़ की खुदाई में मिली है। घटोकच का पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम था। चन्द्रगुप्त प्रथम के काल में गुप्तों की शक्ति में काफी वृद्धि हुयी। उन्होनें लिच्छवी कुल के साथ अपना वैवाहिक संबंध स्थापित किया। इससे उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ गयी और उसने शक्ति सम्पन्न होकर महाराजाधिराज की उपाधि धारण कर लिया चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुन्द्रगुप्त जो लिच्छवी कुल का दोहित्र था ने गुप्त साम्राज्य का शासन भार अपने सबल हाथों में ले लिया। वह एक महान विजेता था। प्रयाग प्रशस्ति से पता चलता है कि उसने सम्पूर्ण भारतवर्ष पर विजय प्राप्त कर लिया था।45 हालाँकि उसके प्रयागप्रशस्ति में वर्णित विजित प्रदेशों की तालिका में वैशाली एवं मिथिला का वर्णन नहीं मिलता है परन्तु उसकी राज्यसीमा को देखने से स्पष्ट लगता है कि वैशाली और मिथिला उसके साम्राज्य का एक अंग था क्योंकि उसका साम्राज्य अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक और हिमालय से लेकर सुदुर दक्षिण तक फैला हुआ था। वैशाली और मिथिला इसी भूखण्ड के मध्य पड़ता है। अतः मिथिला भी उसके राज्य का एक अंग था।

समुन्द्रगुप्त के द्वितीय पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय मिथिला गुप्त साम्राज्य का एक अभिन्न अंग था। वह अपने पिता के समान ही एक उत्कृष्ट विजेता था। महरौली के लौह स्तंभ से पता चलता है कि वह मध्य देश एवं सिन्धु के सातों सहायक नदियों के बीच पंजाब प्रदेश को पारकर दिग्विजय अभियान में बाहलिकों के देश में पहुँचा। तथा वहाँ उसने हुणों को पराभव पहुँचाया एवं सीमांत के विदेशियों को पराजित कर उनका विनाश किया। उक्त अभिलेखों से ही पता चलता है कि बंगाल और सौराष्ट्र के विजय से चन्द्रगुप्त द्वितीय का आधिपत्य पूर्व एवं पश्चिम के दोनों सागरों के बीच की वसुन्धरा पर हो गया। मिथिला की भूमि भी बंगाल और मगध के बीच में पड़ने के कारण उसके साम्राज्य अंतर्गत ही था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में तीरभूक्ति गुप्त साम्राज्य के अनेक भूक्तियों में एक था। यहाँ का शासन प्रतिनिधी राजकुमार द्वारा संचालित किया जाता था। जिस प्रकार सम्प्रति एक प्रमंडल में कई जिले होते है। संभवतः गुप्त साम्राज्य के क्षेत्र का भौगोलिक विभाजन भी उसी प्रकार शासनसुविधा के हेतु मुक्तियों में किया गया था। वसाढ़ (वैशाली) की खुदाई में (1903–04) गुप्तों के अनेक राज्यकीय मुहरें मिली है जिससे इस क्षेत्र के इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ता है। इन मुहरों के अध्ययन से स्पष्ट पता चलता है कि उस समय वैशाली तीरभुक्ति की राजधानी थी। यहाँ भुक्ति शासक का निवास था। यहाँ से प्राप्त मुद्राओं से तीरभुक्ति के प्रादेशिक तथा नागरिक शासन के साथ साथ आर्थिक संगठन का भी काफी ज्ञान होता है। यहाँ पर चन्द्रगुप्त द्वितीय की भार्या धुरुवस्वामिनी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र युवराज गोविन्द गुप्त का शासन था। उसका मुख्यालय वैशाली था। आयंगर का विचार है कि संभवतः तत्कालीन राज प्रतिनिधी कुमार गुप्त को राजधानी में ही रोक लिया गया था और उन्हीं के नाम पर उनका भाई गोविन्दगुप्त शासन कर रहा था। वैशाली की खुदाई में प्राप्त गुप्तकालीन मुहरों से अनेक शासकीय पदाधिकारियों के पद की संज्ञा वाली मुहरें मिली है। जैसे महास्वपति, महादण्डनायक, विनय–स्थिति–स्थापक, महाप्रतिहार तलवर उपरिक कुमार अमात्य, युवराजपादोंय अमांत्य अधिकरण रणभंडागार अधिकरण वलाधिकरण तीरमुक्तों विनय स्थिति स्थापक अधिकरण वैशाल्याधिष्ठनाधिकरण श्री परम भट्टारंक पाद्यों कुमारा मात्यअधिकरण,

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

दण्डपाश्धिकरण आदि।

इस तरह ऊपर वर्णित तथ्यों से पता चलता है कि तीरमुक्ति का शासन कार्यालय और केन्द्रीय सरकार कार्यालय पृथक पृथक थे। और उनके पदाधिकारियों के कार्यालयों को मुहरें भी भिन्न भिन्न थी।

इस तरह मिथिला और वैशाली जिसे अब तीरभुक्ति के नाम से पुकारा जाने लगा। वह गुप्त साम्राज्य का एक अभिन्न अंग था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद कुमार गुप्त और उसका उत्तराधिकारी पुरूगुप्त एवं स्कन्दगुप्त भी हुणों के आक्रमण के दुस्परिणामों के वावजूद इस प्रदेश पर अपना नियंत्रण कायम रखा।

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद (467) शक्तिशाली गुप्त साम्राज्य आंतरिक तथा बाह्य अशांति के कारण पतनोनुमुख होने लगा। धीरे–धीरे अन्य राज्य स्वाधीन होने लगे। यहाँ तक कि महाराजाधिराज तक भी उपाधि धारण करने लगे। ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्धगुप्त ने इस विघटन की प्रक्रिया को रोकने का प्रयास किया। बुद्धगुप्त के शासनाधिकार में पुण्डवर्धनभुक्ति था, जो उत्तर में हिमालय तक फैला हुआ था। जिसमें नेपाल सम्मिलित था। बुद्धगुप्त के बाद के शासक कमजोर निकले फलतः बुद्धगुप्त की मृत्यु के साथ ही गुप्त साम्राज्य छिन्न भिन्न होने लगा। इस तरह गुप्तों के प्रारंभिक काल से लेकर बुद्ध गुप्त के शासनकाल तक मिथिला गुप्त साम्राज्य का अंग बना रहा।

530 ई0 में मालवा के प्राचीन कुल के गुप्त सामंत यशोधर्मन आकाश में चमकते हुए उलके के समान भारत के राजनितिक क्षितिज पर आ धमका और उत्तर भारत के सम्पूर्ण भाग पर कुछ समय के लिए अपना अधिकार जमा लिया। मंदसौर अभिलेख से पता चलता है कि उसने हुण राजा तोरमाण के पुत्र मिहिर कुल को युद्ध में पराजित कर अपने चरण उससे पुजवाया। इस प्रशस्ति के अनुसार यशोधर्मन के साम्राज्य का उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत के श्रृंखला से लेकर दक्षिण में उड़ीसा के गंजाम जिले के महेन्द्रगीरी पर्वत तक फैला हुआ था। उसके साम्राज्य के पूर्व में ब्रह्मपुर नदी बहती थी। और पश्चिम में सागर लहराता था, जहाँ भुक्तों तथा हुणों का अधिपत्य नहीं हो पाया था। वैसे प्रदेशों का भी वह स्वामी अपने शौर्य के बदौलत वन गया था।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि कुछ समय के लिए यशोधर्मन का अधिपत्य मिथिला पर भी स्थापित हो गया था, क्योंकि बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक के भूखण्ड का वह शासक होने का दावा करता है। और इसी बीच में मिथिला भी अवस्थित है, परन्तु इतनी बात सत्य है कि जिस तरह प्रशस्ति से संकेत मिलता है कि उसने गुप्तों का नामोंनिशान मिटा दिया था। वह अतिसयोक्ति पूर्ण है। क्योंकि नरसिंह गुप्त कुमार गुप्त द्वितीय, बुद्धगुप्त और भानुगुप्त वालादित्य के पश्चात् भी कई पीढ़ी तक गुप्तों ने भारत पर अपना प्रभुत्व कमोवेश कायम रखा। फिर उत्तर बंगाल में प्राप्त 543 ई० का एक भूदान प्रमाण पत्र यह प्रमाणित कर देता है कि उस समय वहाँ गुप्तों का शासन था। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ ही समय के लिये यशोधर्मन के अधीन यह भूखण्ड आया था।

गुप्त सम्राटों के पतन के बाद उनके सामंतों ने अपनी स्वतंत्रता की दुंदुभीनाद बजा दी। उसी क्रम में यशोधर्मन ने तो कुछ समय के लिए गुप्तों का साम्राज्य ही समाप्त कर दिया, परन्तु अरूपद अभिलेख से पता चलता है कि पुनः गुप्त एक प्रमुख शक्ति के रूप में उदित हुए। गुप्त एक प्रमुख शक्ति के रूप में उदित हुए। गुप्तों का यह उदय भोखरियों के उत्थान का समकालीन था। यह सच है कि परवर्ती गुप्त शासक अपने अस्तगत पराक्रम को प्राप्त करने का अथक प्रयास किया, पर वह पूर्व शक्ति का छायामात्र ही कहा जा सकता है। क्योंकि साम्राज्य में विघटन की प्रक्रिया बहुत पहले से ही प्रारंभ हो गयी थी। इसी काल में भोखरी वंश भी उत्तर भारत में अपनी शक्ति स्थापित करने में जुटें हुये थे। परवर्ती गुप्त शासकों का अधिकार मूलतः बिहार में ही था, क्योंकि उन लोगों के सारे के सारे अभिलेख पटना तथा साहाबाद जिले में ही मिले है। मात्र एक अभिलेख बंगाल में मिला है। जिसमें जीवित गुप्त का वर्णन क्षितोश चूड़ामणि के रूप में किया गया है। इससे पता चलता है कि उसने अनेक युद्ध अभियान द्वारा हिमालय तथा समुद्र मध्यवर्ती क्षेत्र में अपने वंश की शक्ति तथा प्रतिष्ठा को पुर्नजीवित करने में सफल हुआ। पर इस बात की निश्चित जानकारी नहीं मिलती है कि जीवित गुप्त ने ये सारे अभियान सम्राट के सामंत के रूप में या स्वतंत्र राजा के रूप में चलाया था। ऐसा लगता है कि उसके पुत्र कुमार गुप्त ने एक स्वतंत्र राजा की स्थिति प्राप्त कर ली थी।

बाद में परवर्ती गुप्त शासकों जीवितगुप्त, कुमारगुप्त, दामोदरगुप्त तथा भौखरीवंश इसानवर्मन और सर्ववर्मन की खोज सम्प्रभुता के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गया। यह संघर्ष वस्तुतः मगध की विलुप्त होती जा रही प्रतिष्ठा और कनौज की बढ़ती हुआी शक्ति के बीच था। इसी समय गौड़ आंध्र तथा चालुक्य द्रुत गति से शक्ति सम्पन्न हो रहे थे। महावट स्तंभ अभिलेखों से पता चलता है कि छठीं सदीं में चालुक्य नरेश कौर्तिवर्मन ने वेंग अंग और मगध पर विजय प्राप्त कर लिया। जिसके परिणाम स्वरूप कुमार गुप्त एवं दामोदर गुप्त को अत्यधिक विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। यद्यपि वे लोग इस विपदा से किसी तरह बच निकले, परन्तु उनके उत्तराधिकारियों को इसका फल भुगतना पड़ा। तथा मगध उनके हाथों से निकल गया।

एक अभिलेख में ईशानवर्मन के पुत्र परमेश्वर वर्मन का उल्लेख मिलता है, जिसमें जीवित गुप्त द्वितीय आदित्य सेन का पौत्र द्वारा प्रदत्त एक गांव के अनुदान के नवीनीकरण का उल्लेख किया गया है। इसमें सर्ववर्मण को नगरभुक्ति (पटना जिला) तथा वारनणिक ग्राम शाहाबाद जिला से सम्बद्ध क्षेत्र के पूर्ववर्त्ती शासकों में एक माना गया है। यह कहना कठिन है कि बिहार के शेष भाग भौखरी राज्य में मिला लिया गया था अथवा नहीं, किन्तु गया जिला के बराबर पहाड़ों तथा नागार्जुनों पहाड़ों गुप्त अभिलेख से यह स्पष्ट पता चलता है कि बिहार उस समय गुप्तों के हाथ से निकलकर भौखरी शासकों के अधिकार में आ गया था तथा गुप्तों के अधीन मात्र गौड़ और मालवा रह गया था। अतः भौखरी साम्राज्य पश्चिम में अहिक्षत्र तथा थानेश्वर के अंतिम सीमा तक और पुरब में नालंदा तक फैला हुआ था। उत्तर में तराई क्षेत्र तक तथा दक्षिण में प्रायः उत्तर प्रदेश के दक्षिणी सीमा को पार नहीं कर सका था। इस तरह डॉ० उपेन्द्र ठाकुर का यह मानना सर्वथा उचित है कि मगध तथा तिरहुत सहित समस्त बिहार और गुप्तवंशीय शासक भौखरी सम्राटों के अधीनस्थ स्थानीय

प्रमुख या शासक के रूप में कार्यरत थे।

इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि तीरभुक्ति या मिथिला पर भोखरियों का प्रभुत्व निर्विवाद रूप से कायम था। प्रो० योगेन्द्र मिश्र ने इस तथ्य को और पक्का प्रमाणित करने के लिए कई अन्य तथ्यों का सहारा लिया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि तीरभुक्ति पर भौखरियों का पूर्ण आधिपत्य था।

प्रो० योगेन्द्र मिश्र का विचार है कि जिस तरह गुप्त साम्राज्य का पतन होने पर उत्तर भारत में भौखरीवंश की प्रधानता स्थापित हुयी। ठीक उसी तरह वैशाली के उजार होने पर तीरभुक्ति का दूसरी राजधानी स्वेतपुर में स्थापित की गयी और यह काम भौखरियों ने ही किया। आवागमन की सुविधा और नगर की प्राचीनता एवं समृद्धि के कारण उन लोगों ने श्वेतपुर को चुना होगा। इसके अतिरिक्त तीरभुक्ति के भीतर काफी उत्तर में राजधानी रखने में उन्हें कई कठिनाईयाँ थी। बिल्कुल उत्तर में जंगल ही जंगल थे, उत्तरी भाग में बाढ़ का प्रकोप रहता था जो आज भी है। आवागमण की सुविधा के कारण गंगातीर स्थित श्वेतपुर, मुख्य भौखरी राज्य और गंगातीर स्थित केन्द्रीय राजधानी (कान्यकुब्ज) से जुड़ा हुआ था तथा अकाल पड़ने पर या अन्य प्राकृतिक विपत्तियाँ आने पर नदियों के तीरों पर बसी इस भुक्ति (प्रांत) की सुधि ली जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अकीक, मुहम्मदय इकॉनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला, न्यू दिल्ली, 1974.
2. चौधरी, एच० सी० रायय पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इंडिया, कलकत्ता, 1964.
3. झा, इन्द्रकान्तय विद्यापतिकालीन मिथिला, पटना, 1986.
4. ठाकुर, उपेन्द्रय हिस्ट्री ऑफ मिथिला, 1956.
5. ठाकुर, विजय कुमारय बिगिनिंग्स ऑफ फ्यूडेल्जिम इन मिथिला, भाग 17, 1977–78.
6. मिश्र, उमेशय मिथिला की संस्कृति ओ सभ्यता (मैथिली), दरभंगा।
7. शर्मा, रामप्रकाशय मिथिला का इतिहास, दरभंगा, 2002.
8. सिंह, एस० एन०, हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कलकत्ता, 1922.

*****